Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-7 | July - 2025

Original Article

# हिन्दी उपन्यास और प्रकृति

**डॉ. श्रीकांत पाटील**
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, कोवाड, तह. चंदगड, जि. कोल्हापुर
**ई-मेल: shripatil931@gmail.com**

**Manuscript ID:**
JRD -2025-170757
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 7|
Pp. 297-299
July 2025
**Submitted:** 20 June. 2025
**Revised:** 30 June. 2025
**Accepted:** 15 July. 2025
**Published:** 31 July. 2025

***शोध सार-***
*प्रकृति और मनुष्य का अटूट नाता है। प्रकृति के बिना मानव एक पल भर भी जिंदा नहीं रह सकता। साहित्य और प्रकृति का गहरा एवं पुराना संबंध है। साहित्य में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वर्तमान परिवेश में प्रकृति चित्रण में परिवर्तन आया है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदियों से मानव जीवन, जीव-जंतुओ और पशु पंछियों का अस्तित्व खतरे में पड गया है। मनुष्य विकास के नाम पर प्रकृति का विनाश कर रहा है। पेडों की कटाई, औद्योगीक कचरे को नदियों में बहाना, झील में प्लास्टिक जन्य पदार्थो को फेंकना, डायनामाइट द्वारा पहाडों को तोडना अदियों से प्रकृति प्रदूषित हो रही है। आज भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के कारण प्रकृति का तेजी से ऱ्हास हो रहा है। इसीकारण हिंदी उपन्यासकारों में बाजारवादी और उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रकृति संकट की चिंता सता रही है और उसे बचाने के लिए सभी साहित्यकार कोशिश में जुटे हैं।*

***बीज शब्द-*** *प्रकृति, पर्यावरण, जल संकट, बदलती ऋतुएं, पर्यावरण चिंतन, पर्यावरण संरक्षण, कुदरत आदि।*

## परिचय

आज साहित्य के हर विधाओं में प्रकृति के मनोहारी और भयावह का मार्मिक अंकन देखने को मिलता है। भक्तिकाल में कबीर, जायसी, तुलसीदास, सूरदास और आधुनिक काल में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सुर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, दिनकर आदि अनेक साहित्यकारों ने प्रकृति के मानवीय और उन्मुक्त सौंदर्य का जीवनदायी रुप अंकन किए हैं। मिथिलेश्वर का 'यह अंत नही' और 'माटी कहे कुम्हार से', नासिरा शर्मा का 'कुइयाँजान' अलका सरावगी का 'एक ब्रेक के बाद', भगवतीशरण मिश्र का 'लक्ष्मण रेखा' कुसुम कुमार की 'मीठी नीम', माजी महुआ का 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' आदि उपन्यासों में प्राकृतिक सौंदर्य और प्रकृति की चिंता का मार्मिक अंकन हुआ हैं।

'नालंदा विशाल शब्दसागर' में 'प्रकृति' शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - "सं. 1.वस्तु अथवा व्यक्ति का मूल गुण। स्वभाव नासीर। 2. मिजाज 3. वह मूलशक्ति जिसने अनेक रुपात्मक जगत का विकास किया है। जगत का उपादान कारन। कुदरत। नेचर।"[1] 'प्रकृति' शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'कृ' धातु के पश्चात् 'क्तिमन' (ति) प्रत्यय के योग से बना हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'प्रकरण' 'संदर्भ'। लोकव्यवहार में प्रकृति का अर्थ प्रकरण, संदर्भ न होकर पेड़, पौधे, पशु-पक्षी, नदी जैसे दृश्यमान पदार्थों से लिया जाता है। जबसे मनुष्य का जन्म धरती पर हुआ हैं। तबसे उसका नाता प्रकृति से जुड गया है। प्रकृति से अलग रहकर उसके जीवन का कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। भूख, प्यास, रहन-सहन आदि मनुष्य की आवश्यकताएँ प्रकृति से जुडी हुई हैं।

***Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)***
*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.*
Quick Response Code:

**Address for correspondence:**
*डॉ. श्रीकांत पाटील, सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, कोवाड, तह. चंदगड, जि. कोल्हापुर*

Website: https://jrdrvb.org/
DOI:10.5281/zenodo.16931721
OPEN ACCESS
**How to cite this article:**
*पाटील,. श्रीकांत. (2025). हिन्दी उपन्यास और प्रकृति. Journal of Research & Development, 17(7), 297–299.* *https://doi.org/10.5281/zenodo.16931721*

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-7 | July - 2025

अपने सुख, दु:ख को मानव प्रकृति में देखता हैं। पेड़, पौंधे, चंद्र, सूरज, पृथ्वी, पानी, अग्नि आदि को मानव भगवान का स्थान देते हुए उनकी पूजा करता है। सागर, सरिता, वन उपवन, झींल, चाँद, बाग, बगीचे, पेड़, पौंधों आदि सब मनुष्य की सुखात्मक अभिव्यक्ति हैं। तो आँधी, तुफान, पहाड़ आदि दु:खात्मक अभिव्यक्ति हैं। प्रकृति एक तरफ अपनी सुंदरता और मुक्त हाथों से सुविधा प्रदान करनेवाली शक्ति हैं और दूसरी तरफ वह संहार करनेवाली क्रूर विभीषिका भी हैं। वह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रुप से अनेक प्रकोप प्रदान करती है। ग्राम और अंचलों के जन-जीवन पर इसका गहरा प्रभाव दिखाई देता है। कभी-कभी प्रकृति के रौद्र रुप धारण करने से उनका पूरा जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। प्राकृतिक परिवेश की वजह से ग्रामों में विभिन्न प्रकोपों के दर्शन होते हैं। जटिल प्राकृतिक परिवेश के कारण उन्हें विरासत के रुप में अनेक समस्याएँ निर्माण होती हैं। इनमें से बाढ, सुखा या अकाल, बीमारियाँ, यातायात की असुविधा जैसी अनेक समस्या से ग्राम अत्यधिक त्रस्त दिखाई देता हैं।

आज विज्ञान तथा टेकनॉलजि के सहारे मानव प्रगति की है लेकिन प्रकृति के साथ अधिक मात्रा में खिलवाड कर रहा है। इससे मनुष्य को विभिन्न आपदाओं और विभीषिकाओं का सामना करना पड रहा है। आज पूरे विश्व में 'पर्यावरण संकट' गंभीर मुद्दा बना हुआ है। वी.एन.और जनमेजय सिंह पर्यावरण असंतुलन के संदर्भ में लिखते हैं, "आधुनिक भौतिकवादी संस्कृति और सभ्यता के विकास ने देश के संपदा में श्रीवृद्धि की है। औद्योगीक, नगरीकरण, यांत्रिकीकरण के प्रगति के साथ-साथ विशालकाय मिल फैक्टरी कारखाने भी स्थापित हुए। कृषि में विज्ञान का प्रवेश हुआ, वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के कार्य में वृद्धि हुई। इन सब ने मिलकर प्राकृतिक पर्यावरण को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है।"[2] संयुक्त राष्ट्र संघ की तरफ से सन् 1971 ई में पर्यावरण के बढने प्रदूषण को लेकर चिंता व्यक्त की और पर्यावरण दिवस की नींव रखी गई। कोई भी व्यक्ति पर्यावरण के साथ खिलवाड न करे और पर्यावरण संतुलित रहे इसलिए हर साल 5 जून को विश्व में 'पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, जल संकट, जंगलों की कटाई, भूमि दोहन आदि अनेक समस्याओं पर हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में चिंता व्यक्त की है। ग्लोबल वार्मिंग ओजोन क्षय, अम्लीय वर्षा जैसे अनेक गंभीर विषयों पर उपन्यासकारों के चिंतन के केंद्र में आए हैं। साथ ही 'मदर इंडिया' (1957), भोपाल एक्सप्रेस (1999), इरादा (1989), लगान (2001), तुम मिले (2009), पीपली लाइव (2010), कडवी हवा (2017), केदारनाथ (2018) आदि अनेक हिंदी फिल्मों में प्राकृतिक सौंदर्य और प्राकृतिक प्रदूषण का वास्तविक चित्रण हुआ है। अत: हिंदी उपन्यासों में प्रकृति का चित्रण निम्नलिखित रूप में हुआ हैं।

### 1. जल प्रदूषण

'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में झारखंड के युरेनियम खदानों से निकालने वाले विकिरण और जल प्रदूषण का मार्मिक अंकन हुआ है। उपन्यास में वर्णित सुवर्ण रेखा नदी झारखंड के लोगों की प्यास बुझाती हैं। इस नदी में युरेनियम के कचडे का पानी बहती हुई मिल जाती है। इससे जलीय जीव-जंतुओं पर विकिरण का गहरा प्रभाव पडता है। लेखक के शब्दों में, "जहरीली हो गई है यहाँ की मछलियाँ। खाने से पेट में येठन होती है, जी मिचलता है। वैसे मछलियों की मात्रा काफी घट गई है आजकल।"[3] यहाँ जल प्रदूषण की समस्या का चित्रण हुआ है।

'लक्ष्मण रेखा' उपन्यास में नैनीताल के झील प्रदूषण का प्रकृति पर पडनेवाले गहरा असर का सुंदर अंकन हुआ है। विवेच्य उपन्यास में पर्यटकों द्वारा खाने के और प्लास्टिक जन्य पदार्थों को झील में फेंकते है। इससे झील का पानी प्रदूषित होता है। इस झील की गंदगी से उपन्यास का प्रमुख पात्र विश्वभर परेशान होकर कहता हैं, "इसी झील से पूरे नैनीताल को पानी पिलाते हैं और उसके लिए जल शोषन के क्रम में पडनेवाली क्रोमीन की मात्रा वर्ष प्रतिवर्ष बढती ही जा रही है। अब तो यह पानी इस दवा से इतना प्रदूषित हो गया है कि हम समतल-वासियों को यह रास ही नहीं आता।"[4] यहाँ पर्यटकों द्वारा फैलाये प्राकृतिक प्रदूषण का वास्तविक चित्रण हुआ है।

### 2. पुरवा ठंड से परेशान ग्रामवासी

'यह अंत नहीं', उपन्यास में चित्रित बिहार प्रांत के भोजपुर जिले के खवासडीह गाँव में पुरवा हवा की ठंड से खवासडीह के ग्रामवासी अत्यंत त्रस्त पाए जाते हैं। इसके संदर्भ में मिथिलेश्वर जी लिखते हैं, "हाथ पाँव टूट रहे थे। बदन पिरा रहा था। मन भारी-भारी बना हुआ था। कुछ भी करने की इच्छा नहीं हो रही थी। इसके बावजूद भोर की ललाई आने से पहले ही वह उठ गई। इस तबयीन विरुद्ध हवा से वह अभी से ही पछाड खा गई तो सारा जीवन कैसी खेपेगी...? मौसम की खराबी और हवा-पानी बदसलूकी का सामना तो उसे करना ही पडेगा। जो मौसम हवा-पानी को खराबी से डर जाते हैं उन्ही पर इसका असर भी होता हैं। जो इससे भिड जाते हैं। उस पर इसका जोर नहीं चलता। उसे पूरवा की परवाह नहीं करनी।"[5] यहाँ लेखक ने ठंड से परेशान ग्रामवासी का चित्रण किया हैं।

### 3. प्राकृतिक संसाधन का दोहन

'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में युरेनियम खदानों से निकालनेवाले विकिरण और प्रदूषण के दूष्परिणामों से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन का मार्मिक अंकन हुआ है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र गुरुचरन को औद्योगीक फॅक्टरियों से निकलनेवाले विषैले पदार्थों से प्रकृति की हानि होती है यह जानकारी थी। इसीलिए वे इस उपन्यास में प्रकृति को बचाने के संदर्भ में बार-बार चेतावनी देते हैं लेकिन हम लोग उसे सुनते नहीं है। लेखिका के शब्दों में, "दुनिया के सबसे ताकतवर देश में पेड-पौधे मरने लगे, इस तरह जैसे धरती के अंदर

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-7 | July - 2025

किसी ने जहर घोल दिया हो। हवा में ऑक्सीजन की कमी हो गई कि लोगों के लिए साँस खींचना दृष्कर होने लगा। सारा धरती का पानी सूखने लगा।"[6] यहाँ प्रकृति को बचाने के संदर्भ में लेखक ने चेतावनी दी है।

'मीठी नीम' उपन्यास में पर्यावरणीय चिंताओं और पर्यावरण संरक्षण का मार्मिक अंकन हुआ है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित ओमना प्रकृति और पर्यावरण को बचाने की जिम्मा उठाती है। साथ ही वह पर्यावरण के संदर्भ में लोगों में जागरुकता निर्माण करती है। परंतु दिल्ली में मैट्रों और सडके बनाने के लिए बीच में आए पेडों को काट दिए गए हैं। दिल्ली के विकास गति को देखकर पर्यावरण की होनेवाली हानि से चिंतित ओमना कहती हैं, "दिल्ली नाम की राजधानी जो निखालिस पत्थर सीमेंट का जंगल, जहाँ किन्हीं जटाधारी वृक्षों की बलि सिर्फ इसलिए चढाई जाती : रोडी पत्थर तार कील की सडकों, पुलों को विस्तार देना है।"[7] यहाँ मानवीय क्रियाकालापों से प्राकृतिक संसाधन का होनेवाले ऱ्हास का चित्रण हुआ है।

### 4. प्राकृतिक सौन्दर्य

'माटी कहे कुम्हार से' उपन्यास में चित्रित बिहार प्रांत के भोजपुर जिले के गाँगी के किनारे स्थित 'नरही' नामक झोपटपट्टी में वैशाख मास में मुनिला गांगी झील में नहाने की प्राकृतिक सौंदर्य का सुंदर अंकन हुआ है। इसके संदर्भ में मिथिलेश्वर जी लिखते हैं, "गांगी के ठंडे जल से उसका तन-मन सिहर उठता। डुबकी लगाने के बाद जब पानी में खडी होती तो हवा का स्पर्श और अच्छा लगता। जल से भीगे तन-मन में हवा जैसे ताजगी और स्फूर्ति भर देती। नहाने के लिए सूर्योदय से पहले का यह समय उसे एकदम माकूल जान पडता। शांत वातावरण धुँधलके में गांगी किनारे की झाडियाँ और वृक्ष अपनी स्निग्धता लुटाते जान पडते। हवा में मौसमी वृक्षों की खूशबू भरी रहती। भोर ही अगवानी से चिडियों की चहचहाहट बहुत मधुर जान पडती। जल भी थिराकर स्वच्छ बन गया रहता।"[8] यहाँ प्राकृतिक सौंदर्य का सुंदर चित्रण हुआ है।

### 5. पानी की समस्या

'कुइयाँजान' उपन्यास में चित्रित बिहार प्रांत के भोजपुर जिले में पानी की समस्या से ग्रामवासी अत्यंत त्रस्त पाए जाते हैं। पानी की समस्या का चित्रण करते हुए नासिरा शर्मा लिखती हैं, "उनके यहाँ भी पानी की हाय तौबा मची थी। शिव मंदिर के पुजारी भी बिना नहाए परेशान बैठे थे। उन्होंने न मंदिर धोया था न भगवान को भोग लगाया था। उनके सारे गगरे लोटे खाली पडे थे। नल की टोटी पर कई बार कौवा पानी की तलाश में आकर बैठ उड चुका था।"[9] यहाँ लेखिका ने पानी की समस्या से पीडित लोगों की दर्द का चित्रण किया है।

निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि मनुष्य का जन्म से ही प्रकृति से घनिष्ठ संबंध रहा है। मनुष्य का जीवन प्रकृति से जुडा हुआ होने के कारण मनुष्य अपना दु:ख प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर भूल जाता है। पेड पौधों के साथ खेलना, फूलों को देखकर प्रसन्न होना यह सभी बातें प्राकृतिक आकर्षण का रुप है। इसके विपरित ग्लोबल वार्मिंग, बाढ, सूखा या अकाल, भूकंप, तूफान, बीमारियाँ, यातायात की असुविधा जैसी बातें प्रकृति से मानव को दी जानेवाले चेतावनी है। लेकिन अगर हम लोग ठिक समय रहते इन बातों नहीं समझेंगे तो प्रकृति के रौद्र रुप का सामना करना पडेगा। अत: स्पष्ट है कि हिंदी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ प्राकृतिक प्रदूषण से प्रकृति को बचाने की माँग की है।

### संदर्भ संकेत :

1) श्री. नवल जी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ. 833, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी (1965)
2) आलोकुमार शुक्ल- 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में पर्यावरणीय विमर्श, पृ. 25
3) माजी महुआ - मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, पृ. 38, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली (2015)
4) भगवतीचरण मिश्र- लक्ष्मण रेखा, पृ. 66, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (2006)
5) मिथिलेश्वर - यह अंत नहीं, पृ. 40, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली (2003)
6) अलका सरावगी - एक ब्रेक के बाद, पृ. 103, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली (2006)
7) कुसुम कुमार- मीठी नीम, पृ. 272, किताब घर, प्रकाशन, नई दिल्ली (2012)
8) मिथिलेश्वर - माटी कहे कुम्हार से, पृ. 20, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, (2006)
9) नासिरा शर्मा- कुइयाँजान, पृ. 03, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली (2005)